REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

हिंदी समाचारपत्रों में भाषाई परिवर्तन

डॉ. रजनीश कुमार मिश्रा
हिंदी विभाग, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय .

हिंदी भाषा के गद्य स्वरूप के निर्माण एवं उसके परिवर्तन में प्रिंट मीडिया का योगदान हमेशा से अहम रहा है । जिसे हम बाल मुकुंद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबूराव विष्णु पराड़कर जैसे साहित्यकार एवं कुशल संपादकों द्वारा हिंदी भाषा के निर्माण में दिये गए योगदान से समझ सकते हैं । इसी परम्परा को बाद के वर्षों में अज्ञेय, रघुवीर सहाय, प्रभाष जोशी आदि संपादकों ने भी जारी रखा । भाषा निर्माण एवं परिमार्जन के इस यज्ञ में हिंदी समाचारपत्रों ने भाषा संबंधित तात्कालिक मुद्दों पर विचार-विमर्श के लिए स्थान उपलब्ध कराया । इन पत्रकारों में जो उस समय मुख्य संपादकीय विभाग से जुड़े हुए थे, उनमें भाषा के प्रति बहुत सजगता होती थी । प्रत्येक समाचारपत्र में भाषा को लेकर अपने नियम कायदे होते थे, फलस्वरूप हमेशा भाषा में परिमार्जन के लिए विमर्श की स्थिति बनी रहती थी । इन पत्रकारों के इसी योगदान के बारे में डॉ. कृपाशंकर चौबे लिखते हैं :

"भाषा के प्रति सजगता इतनी थी कि छोटी सी त्रुटि पर भी विवाद खड़ा हो जाता था। 1905 में 'अनस्थिरता' शब्द को लेकर बाल मुकुंद गुप्त और महावीर प्रसाद द्विवेदी के बीच जो विवाद हुआ था, उससे भाषा व व्याकरण को एक नई व्यवस्था मिली थी। पहले के पत्रकार नए शब्द गढ़ते थे। 'श्री', 'श्रीमती', 'राष्ट्रपति', 'मुद्रास्फीति' बाबूराव विष्णु पराड़कर के दिए शब्द हैं।" [1]

अतः हम कह सकते हैं कि लोक शिक्षण के द्वारा भाषाई समाज में भाषा के प्रति जागरूकता लाने का काम भी हिंदी समाचारपत्रों का रहा है । जिसे वह तात्कालिक भाषा संबंधी चिंतन और दृष्टिकोण के रूप में अपने पृष्ठों पर जगह देते रहे हैं । भूमंडलीकरण और उससे संबंधित विचारों के प्रवाह के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है, इसलिए भूमंडलीकरण अपनी जरूरतों के अनुसार भाषा को गढ़ता रहा है । साथ ही यह उस समाज के भाषा संबंधित दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है । हिंदी समाचारपत्रों के वैचारिक पृष्ठों में भाषा संबंधित मुद्दों और दृष्टिकोण में यह बदलाव किस रूप में आया इसका अध्ययन इस अध्याय लेखन के मूल में है।

[1] डॉ. कृपाशंकर चौबे, शोध और शिक्षण की सीमाएँ,
http://prayaslt.blogspot.in/2010/02/blog-post_399.html (Access date 05-02-2017)

हिंदी समाचारपत्रों के वैचारिक पृष्ठ और भाषा संबंधित मुद्दे

हिंदी समाचारपत्रों का संपादकीय विभाग हमेशा से भाषा के प्रश्न पर बेहद संवेदनशील और जागरूक रहा है । कारण प्रिंट माध्यम के विकास के साथ ही भाषागत एकरूपता और परिमार्जन के प्रति उसे अपने दायित्व बोध का ज्ञान है । यही कारण है कि वेब मीडिया, स्मार्टफोन, रेडियो टेलीविज़न एवं संचार माध्यम के मुकाबले प्रिंट माध्यम भाषा के प्रति ज्यादा जवाबदेह नज़र आता है । समाचारपत्रों की भाषा के प्रति इसी जिम्मेदारी के बारे में कृष्ण बिहारी मिश्र लिखते हैं :

"उन्नीसवीं शताब्दी में हिंदी गद्य के निर्माण की चेष्टा और हिंदी प्रचार आन्दोलन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कितना पुष्ट था इसका साक्ष्य भारत मित्र (सन 1878 ई.) सार सुधानिधि (सन 1879) और उचित वक्ता (सन 1880) के जीर्ण पृष्ठों पर मुखर है।" [2]

समाचारपत्रों के इन पृष्ठों पर भाषा संबंधित तत्कालीन चिंतन का इतिहास मौजूद है, भाषा और भाषायी समाज को लेकर हो रही राजनीति विचार एवं विमर्श के अध्ययन के लिए इन समाचारपत्रों के पुराने पृष्ठों को देखना होगा । इन पृष्ठों ने जहाँ तत्कालीन भाषायी चिंतन को प्रभावित किया, वहीं तात्कालिक राजनीति ने भी इसे प्रभावित किया जिसे हम ब्रिटिश भारत में भाषा, लिपि एवं धर्म विवाद से अच्छी तरह समझ सकते हैं :

"इसके लिए अंग्रेजों ने जातीय भाषा खड़ी बोली को जो हिंदी-प्रदेश के हिंदी मुसलमानों के व्यापारिक, दैनिक कामकाज और बोलचाल की मातृभाषा थी, उसे सीधे धर्म से जोड़कर 'हिंदी' को हिन्दुओं और 'उर्दू' को मुसलमानों की भाषा बना दिया । जहाँ उन्होंने एक ओर लिपि -अलगाव से हिंदी - उर्दू भाषा - विवाद को जन्म दिया, वहीं फ़ारसी लिपि का संबंध इस्लाम से बताकर हिन्दू - मुसलमान झगड़े को भड़काया । तत्कालीन हिंदी पत्रकारिता पर भी इस भाषा राजनीति और विवाद तथा अंग्रेजी अलगाववादी नीति का स्थायी प्रभाव पड़ा" [3]

इस दो तरफ़ा प्रक्रिया में हिंदी के इन बुद्धिजीवी पत्रकारों और साहित्यकारों ने समाचारपत्रों के साथ-साथ भाषायी समाज के लिए भी एक ऐसी भाषा गढ़ने का काम किया जो उन्हें उस भाषा के विकास के लिए आवश्यक लगाती थी । आरंभिक हिंदी समाचारपत्रों की भाषा संबंधी इस दृष्टिकोण के बारे में रॉबिन जेफ्री लिखते हैं :

"इससे पहले पुराने ढंग के संभ्रांत और बुद्धिजीवी ऐसी भाषा निर्मित और विकसित करना चाहते थे जो संस्कृतनिष्ठ हो और जिसमें शास्त्रीय सौन्दर्य और आलंकारिकता की झलक मिल सके । वे इसकी लगातार वकालत भी करते थे । इसे ही वे उत्तम कोटि का गद्य मानते थे । अपनी इन्हीं योजनाओं के तहत खासतौर पर हिंदी में ढूंढ-ढूंढकर अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर संस्कृत के क्लिष्ट शब्द डाले गए।" [4]

---

[2] कृष्ण बिहारी मिश्र, हिंदी पत्रकारिता जातीय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण भूमि पृष्ठभूमि, **(2004)** पृष्ठ सं **472**, ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली

[3] डॉ. मीरा रानी बल, राष्ट्रीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता, **(2005)** पृष्ठ सं **95,** वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

[4] रॉबिन जेफ्री, भारत की समाचारपत्र क्रांति पूंजीवाद, राजनीति और भारतीय भाषाई प्रेस **1977-99, (2004)** भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली (यह पुस्तक **India's Newspaper Revolution: Capitalism, Politics and the Indian- language Press,** 1977-99 शीर्षक से **Oxford University press, New Delhi** प्रकाशक द्वारा वर्ष **2000** में अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तक का हिंदी अनुवाद है, जिसके अनुवादक डॉ. सत्यकाम हैं। इस पुस्तक को मीडिया छात्रों एवं शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण मानते हुए भारतीय जन संचार संस्थान दिल्ली की अनुवाद परियोजना के तहत अनुदित किया गया है।)

लेकिन भूमंडलीकरण के दौरान विशेषकर 21 वीं सदी के प्रथम दशक में भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन हुआ । एक ऐसे नव मध्यवर्ग का उदय हुआ जो पढ़ता- लिखता तो अंग्रेजी था, लेकिन उसकी दिनचर्या हिंदी की थी । इस मध्यवर्ग के पास इस बाजारीकृत व्यवस्था में क्रय शक्ति का बड़ा हिस्सा था । अतः बाज़ार और तकनीक ने मिल कर हिन्दी भाषा के समाचारपत्रों की उस भाषा संबंधी पुरानी धारणा में परिवर्तन किया जो कि भाषा के निर्माण एवं परिमार्जन में केवल संस्कृत या खुद के द्वारा गढ़ी गयी शब्दावली के प्रयोग की महत्वाकांक्षी थी । अब समाचारपत्र लोगों के द्वारा बोली जाने वाली हिंदी को अपनी भाषा के रूप में अपना रहे हैं फिर चाहे क्यों न उसमें अंग्रेजी शब्दों की बहुलता ही हो । और इस बदलाव का मुख्य कारण बाज़ार की प्रतिस्पर्धा है ।

LBP PUBLICATION